सूर्य पूजा : कोणार्क का सूर्य मंदिर

कलिंग के नाम पर दो बातें एक साथ याद आती हैं। मौर्य शासक अशोक और कोणार्क का सूर्य मंदिर।अशोक का कलिंग युद्ध जुगुप्सा और करुणा के भाव एक साथ जगाता है। यह इतिहास के अन्य युद्धों जैसा नहीं है। इस युद्ध की अशोक को 'महान' का दर्जा दिलवाने में खास भूमिका है। हम अशोक के बारे में जब भी कुछ लिखते पढ़ते सोचते हैं कलिंग युद्ध की छाया हमारे साथ-साथ चलती है। सम्राट अशोक के हिंसक अशोक से अहिंसा के प्रवर्तक में रूपांतरण की गाथा को इतिहास पढ़ते हुए विस्मृत करना मुश्किल है। इतिहास से इतर भी कलिंग और अशोक को भूलना इसलिये संभव नहीं है क्योंकि अशोक की लाट को अपने रोकड़े पर हम दिनभर में इतनी बार देखते हैं कि उसकी याद हमारी दिनचर्या में रूढ़ हो गयी है।

कलिंग से जुड़ा दूसरा पन्ना कोणार्क का है। यूँ तो पूरा उड़ीसा ही पत्थर के मन्दिरों से पटा पड़ा है पर उनके बीच हीरे की कनी कोणार्क का सूर्य मंदिर ही है। कोणार्क का परिवेश मोहता है। टटोलने पर वजह कोई नहीं मिलती। न जाने कितने स्मारक इसी अंदाज में पूरे हिंदुस्तान में रूबरू खड़े देखे हैं पर कोणार्क कुछ अलग है,बेनजीर।

फिलहाल मंदिर में जिस हिस्से को हम मय छत और शिखर देखते हैं उसे वास्तुशास्त्र में जगमोहन कहा जाता है। उड़ीसा मंदिर वास्तु के चार महत्वपूर्ण अंग माने जाते हैं जो क्रमशः रेखा देउल, पीढ़ा देउल, नटमण्डप और भोगमण्डप के रूप में एक अक्ष पर विन्यासित होते हैं। रेखा देउल और पीढ़ा देउल सभी मंदिरों में पाए जाते हैं। ये दोनों वास्तु अंग प्रायः एक ही जगती(अधिष्ठान/चबूतरा) पर स्तिथि होते हैं। नट मंडप और भोगमण्डप बाद में जोड़े गए अंग हैं और प्रायः विकसित मंदिरों में ही पाए जाते हैं।

रेखा देउल मंदिर के गर्भगृह को कहते हैं। कोणार्क के सूर्य मंदिर में रेखा देउल खस्ता हाल है उसकी छत गिर चुकी है। कभी इसी गर्भगृह में सूर्य की खूबसूरत प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई थी। पीढ़ा देउल गर्भ गृह से लगा सभामंडप वाला हिस्सा है। कोणार्क मन्दिर परिसर में यही हिस्सा है जिसे मय छत देखा जा सकता है। शेष सारी संरचनाये छत और शिखर विहीन हैं।

नट मण्डप कुछ दूरी पर है। यह नृत्य का मण्डप होता था जहाँ देवता की प्रतिष्ठा में नृत्य का आयोजन होता था। भोग मण्डप चढ़ावे से संबंधित था। चर्चा है कि इस मंदिर को गंग शासक नरसिंह देव ने विजय स्मारक के रूप में बनवाया था। जाहिर है कि विजयोत्सव के प्रतीक को भव्य होना ही था।

कोणार्क का यह सूर्य मन्दिर अपने सम्पूर्ण रूप में कैसा दिखाई देता था ये जानने के लिए हमारे पास कोई स्रोत नहीं है। कुछ लोक संदर्भों में ये कहा गया है कि मंदिर कभी पूरा बना ही नहीं। इसके निर्माण के दौरान ही नरसिंह देव की मृत्यु हो गयी और यह अधबना ही रहा। मन्दिर के जो रेखांकन और तस्वीरें हमें उपलब्ध हैं वो काफी बाद के हैं। सभी में मन्दिर अपूर्ण ही दिखता है। सबसे पुराना 1847 का लिथोग्राफ है जिसे जेम्स फर्ग्यूसन ने बनाया था।इसकी विशेषता रेखा देउल का शिखर है जिसे जगमोहन के पीछे पृष्ठभूमि में देखा जा सकता है।

मन्दिर के विध्वंस की वजहें अस्पष्ट हैं। विवादित भी।उन पर एक किस्म का रहस्य का पर्दा पड़ा हुआ है। जो वजहें बताई गई हैं उनमें मानवीय और प्राकृतिक सभी कारकों को समेटा गया है। विधर्मी आक्रमण और भूकम्प की थ्योरी में ज्यादातर लोग यकीन करते हैं।

खस्ताहाल होने के बावजूद कोणार्क के सूर्य मंदिर ने जो अभूतपूर्व ख्याति हासिल की और विश्व की संरक्षित धरोहरों में अपनी जगह बनाने में कामयाब रहा उसकी वजह संगतराशों की हुनरमंदी है।

इसी मंदिर के शिल्प से उड़ीसा की राज्य सरकार ने अपना राजकीय चिन्ह लिया है। खंडहर में तब्दील हो रहा ये मन्दिर आज भी बेजोड़ है। आज की तारीख जब हम कोणार्क जाते हैं तो एक भव्य स्मारक को खण्डहर में तब्दील होते हुए देखते हैं। मुख्य मन्दिर को बाँस,बल्ली, लकड़ी,लोहे की सहायता से अलम्ब देकर कोशिशन खड़ा रखा गया है। न सिर्फ गर्भगृह में प्रवेश वर्जित है बल्कि जगती पर चढ़ने की भी मनाही है। स्मारक की भव्यता को आप दूर से ही निहार सकते हैं, सूर्य की मानिंद..

कोणार्क का सूर्य मन्दिर,1847
लिथोग्राफ जेम्स फर्ग्युसन
चित्र में जगमोहन के पीछे पृष्टभूमि में रेखा देउल का शिखर देखा जा सकता है।

कोणार्क मन्दिर परिसर का शिल्प जिसे उड़ीसा राज्य का राजकीय चिन्ह बनाया गया।

Handout given by Dr. Neelima Pandey, JNPG College, Lucknow
Suggested Readings: Konark by Debala Mitra; Temples of India: Myths and Legends by Mathuram Bhootlingam